डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज

– वाराणसी –

स्नातक पाठ्यक्रम

बी.ए. भाग - 2 (तृतीय सत्र)

-: हिन्दी विभाग :-
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

बी. ए. भाग–2

तृतीय सत्र

पंचम प्रश्न प्रत्र

कोड : BAH-211

आधुनिक काव्य (एक)

HCHD – 205 C

क्रेडिट : 03

आधुनिक कविता की ऐतिहासिक उपलब्धि 'छायावाद' के चार शीर्ष कवियों जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंद पंत और महादेवी वर्मा की प्रतिनिधि कविताओं के पाठ के साथ ही इस पाठ्यक्रम में हम इन कवियों की विशिष्टता को समझने का प्रयास करेंगे। छायावाद की पूर्ववर्ती काव्यधारा के प्रतिनिधि के रूप में मैथिलीशरण गुप्त का अध्ययन भी यहाँ किया जायेगा।

पाठ्यांश :

(1) मैथिलीशरण गुप्त : हम कौन थे, कैकेयी का अनुताप, प्रियतम तुम श्रुति पथ से।

(2) जयशंकर प्रसाद : मेरे नाविक, तुमुल कोलाहल कलह, बीती विभावरी जाग री, आह वेदना मिली विदाई, पेशोला की प्रतिध्वनि।

(3) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : बादल राग–6, स्नेह निर्झर बह गया है, संध्या सुंदरी, तोड़ती पत्थर, राजे ने फिर रखवाली की।

(4) सुमित्रानंदन पंत : मोह, प्रथम रश्मि, भारतमाता ग्रामवासिनी।

(5) महादेवी वर्मा : जब यह दीप थके तब आना, जाग तुझको दूर जाना, मैं नीर भरी दुख की बदली।

इकाई 1 : **मैथलीशरण गुप्त** : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना

(III) आख्यान की आधुनिकता

(IV) काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास

इकाई 2 : **जयशंकर प्रसाद** : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) रोमेंटिक प्रवृत्ति

(III) राष्ट्रीय चेतना

(IV) भाषा एवं शिल्प

इकाई 3 : **निराला** : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) छायावादी चेतना

(III) प्रगतिशील चेतना एवं प्रयोगशीलता

(IV) भाषा एवं शिल्प

इकाई 4 : **सुमित्रानंदन पंत** : (I) काव्य विकास

(II) स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति

(III) प्रकृति चित्रण की विशिष्टता

(IV) भाषा एवं शिल्प

इकाई 5 : **महादेवी वर्मा** : (I) काव्य संसार

(II) छायावादी चेतना

(III) रहस्य भावना

(IV) भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1. मैथिलीशरण गुप्त : रेवतीरमण, साहित्य अकादमी नई दिल्ली
2. जयशंकर प्रसाद : नंददुलारे वाजपेयी, भारतीय भंडार, इलाहाबाद
2. कामायनी – एक पुनर्विचार : मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. निराला की साहित्य साधना (भाग दो, तीन) : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. सुमित्रानंदन पंत : डॉ. नगेन्द्र
5. छायावाद : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. महादेवी वर्मा : जगदीश गुप्त, नई दिल्ली, 1994
7. छायावाद की प्रासंगिकता : रमेशचन्द्र शाह, नई दिल्ली, 1973
7. छायावाद और नवजागरण : महेन्द्रनाथ राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त : रामधारी सिंह दिनकर
9. कांतिकारी कवि निराला : डा. बच्चन सिंह
10. आत्महंता आस्था : निराला : दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेम शंकर।

षष्ठम प्रश्न प्रत्र

आधुनिक काव्य (दो) BCHD – 206C

कोड : BAH-212

क्रेडिट : 03

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रतिनिधि कवियों माखनलाल चतुर्वेदी और रामधारी सिंह दिनकर, प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि कवियों नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल तथा प्रयोगवादी आधुनिकता बोध के शीर्ष कवि अज्ञेय की महत्वपूर्ण कविताओं के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में इन काव्य धाराओं तथा इसके प्रतिनिधि कवियों की विशिष्टताओं की समझ विकसित करना ही इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

पाठ्यांश :

(1) माखनलाल चतुर्वेदी : कैदी और कोकिला, उलाहना।

(2) रामधारी सिंह दिनकर : हिमालय, दिल्ली, विपथगा।

(3) केदारनाथ अग्रवाल : मैंने उसको, मुझे नदी से बहुत प्यार है, चंद्रगहना से लौटती बेर।

(4) नागार्जुन : मास्टर, यह दंतुरित मुस्कान, अकाल और उसके बाद।

(5) अज्ञेय : नदी के द्वीप, कलगी बाजरे की, दूर्वादल।

इकाई 1 : माखनलाल चतुर्वेदी : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना

(III) स्वच्छंदतावादी चेतना

(IV) भाषा एवं शिल्प

इकाई 2 : रामधारी सिंह दिनकर : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) स्वाधीनता आंदोलन का प्रभाव

(III) आख्यान की आधुनिकता

(IV) भाषा एवं शिल्प

इकाई 3 : नागार्जुन : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) प्रगतिशीलता

(III) राजनीतिक चेतना

(IV) रचना विधान

इकाई 4 : केदारनाथ अग्रवाल : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) लोक जीवन एवं प्रकृति

(III) राजनीतिक चेनता

(IV) रचना विधान

इकाई 5 : अज्ञेय : (I) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि

(II) प्रयोगशीलता

(III) आधुनिकता भावबोध

(IV) भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1 मुक्तिबोधः ज्ञान और संवेदना – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

2 नयी कविता और अस्तित्ववाद – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

3 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी, नई दिल्ली

4 समकालीन हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नई दिल्ली

5 समकालीन कविता का यथार्थ – परमानंद श्रीवास्तव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी

6. कविता के नये प्रतिमान –नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

7. एक कवि की नोटबुक : राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

8. कविता और समाज : अरूण कमल , वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

9. मेरे समय के शब्द : केदारनाथ सिंह, राधकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली

10. कवियों की पृथ्वी : अरविंद त्रिपाठी, आधार प्रकाशन, नयी दिल्ली

11. कवि कह गया है : अशोक बाजपेयी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली

12. समकालीन काव्य यात्रा : नंदकिशोर नवल,राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

13. साठोत्तरी कविता : परिवर्तित दिशायें : विजय कुमार, प्रकाशन संस्थान

बी0 ए0 भाग–2

तृतीय सत्र

तृतीय प्रश्न पत्र HD -203 L

कोड : BAHL-211
क्रेडिट : 03

1. रश्मिरथी (तीसरा सर्ग) : रामधारी सिंह दिनकर
2. प्रतिनिधि हिन्दी निबंध (पाठ्य निबंध) : ईर्ष्या, एक कुत्ता एक मैना, गेहूँ बनाम गुलाब, शिवशंभू के चिट्ठे, मजदूरी और प्रेम

इकाई 1 : **रश्मिरथी** (I) कविता के विभिन्न रूप

(II) रश्मिरथी : कथावस्तु

(III) कर्ण का चरित्र

(IV) भाषा एवं शिल्प

इकाई 2 : (I) विधा के रूप में निबंध

(II) हिन्दी निबंध : संक्षिप्त रूपरेखा

(III) ईर्ष्या : केन्द्रीय विचार

(IV) ईर्ष्या : शिल्प

इकाई 3 : (I) एक कुत्ता एक मैना : केन्द्रीय विचार

(II) एक कुत्ता एक मैना : शिल्प

(III) गेहूं बनाम गुलाब : केन्द्रीय विचार

(IV) गेहूं बनाम गुलाब : शिल्प

इकाई 4 : (I) शिवशम्भू के चिट्ठे : केन्द्रीय विचार

(II) शिवशम्भू के चिट्ठे : शिल्प

(III) मजदूरी और प्रेम : केन्द्रीय विचार

(IV) मजदूरी और प्रेम : शिल्प